

22

ISSN : 0976-5778

वर्ष : 2018-19

ईसुरी

बुन्देलखण्ड के धर्म-आध्यात्म और पर्यटन पर केन्द्रित



अनुक्रम

प्रधान संपादक की कलम से...

- प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 3

संपादकीय

- डॉ. राजेन्द्र यादव 5

भाग - एक : बुन्देली इतिहास और पर्यटन

1. बुन्देलखण्ड का धर्म अध्यात्म : एक दृष्टि	- डॉ. राजेन्द्र यादव एवं	9
	- डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र	
2. ऐरण एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थल	- डॉ. नागेश दुबे	16
3. कालिंजर इतिहास के झरोखे से	- एन.डी. सोनी	26
4. अवधपुरी से ओरछा आये अवध नरेश	- हरिविष्णु अवस्थी	31
5. खजुराहो : कलात्मक सौन्दर्य और धर्म	- अभिनन्दन गोइल	36
6. चित्रकूट प्राचीन तीर्थ	- रामनारायण शर्मा	42
7. राहतगढ़ दुर्ग : एक परिचय	- अभिषेक दांगी	46
8. गढ़पहरा : एक दर्शनीय स्थल	- सुधीर साहू	48
9. रहली की सांस्कृतिक धरोहर	- डॉ. श्याम मनोहर पचौरी	50
10. उनाव बालाजी का सूर्यमन्दिर	- डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला	54
11. सूर्यतीर्थ बालाजी	- डॉ. राज गोस्वामी	59
12. बुन्देलखण्ड में सूर्य मन्दिरों की परम्परा	- डॉ. मशकूर अहमद एवं	63
	- डॉ. सीमा ममता कुजूर	
13. भेड़ाघाट : प्रकृति का अनूठा सौन्दर्य	- डॉ. मनीष कुमार	67
14. चौंसठ योगिनी मंदिर : भेड़ाघाट	- डॉ. हिमांशु कुमार, अरविन्द कुमार	70
15. प्राचीन शिवलिंग कुण्डेश्वर	- ओमप्रकाश तिवारी	73
16. नोहटा का प्राचीन शिव मन्दिर	- डॉ. मंगलसिंह अहिरवार	77
17. बांदकपुर के जागेश्वरनाथ	- इंजी. अमर सिंह राजपूत	80
18. बुन्देलखण्ड के महत्त्वपूर्ण स्थान	- रतिराम अहिरवार	84
19. बुन्देलखण्ड के लोकदेवता : लाला हरदौल	- डॉ. सरोज गुप्ता	89

चौंसठ योगिनी मंदिर : भेड़ाघाट

डॉ. हिमांशु कुमार एवं डॉ. अरविन्द कुमार*

जबलपुर भेड़ाघाट का चौंसठ योगिनी मंदिर -

नर्मदा तथा बावनगंगा के संगम स्थल के तुरंत बाद चिमटानुमा चट्टानी भाग एक वृत्ताकार छोटी पहाड़ी के रूप में उभरा हुआ है। इस पहाड़ी की चोटी पर 10 वीं सदी ईसवी ई. का विलुप्त चौंसठ योगिनी सम्प्रदाय का मंदिर अवस्थित है। मानचित्रनुसार आस-पास के क्षेत्र में यह सबसे ऊँचा स्थान है, जिसकी स्थिति अद्भुत एवं श्रेष्ठ है। नर्मदा तल से अनियमित आकार के पथरों से निर्मित सोपान मंदिर के दक्षिण पूर्व प्रवेश द्वार तक पहुँचता है। उसके उत्तर-पूर्व प्रवेश द्वार से रोड मार्ग की ओर झरने (धुआँधार) को जोड़ता हुआ दूसरा सोपान निर्मित है। समीप ही नीचे, दक्षिण में तुषारनुमा श्वेत दीवारों की सीमाओं के मध्य नर्मदा का नीला जल सुप्तावस्था सा प्रतीत होता है। उत्तर तथा पश्चिम का दृश्य जंगल युक्त ऊँचाइयों से घिरा हुआ है, परन्तु पूर्व में आँखे नीचे नदी की लम्बाई की पहुँच तक देखती हैं। जबलपुर की ओर मीलों दूर तक।

प्राचीन तथा मध्यकालीन भारत के गूढ़ सम्प्रदायों में से चौंसठ योगिनी सम्प्रदाय एक है। मातृदेवी की परिचारिकाएँ अनविर्यतः योगिनियाँ हैं हालाँकि इनसे सम्बन्धित भिन्न व्याख्याएँ भी हैं। भारत में योगिनियों का सन्दर्भ बहुत प्राचीन उत्तर वैदिक काल से पाया जाता है। नियमितरूप से योगिनी सम्प्रदाय की

पूजा लगभग 8वीं-9वीं श. ई. में अस्तित्व में आयी। इस दिशा में योगिनी कौल सम्प्रदाय के सूत्रधार संत मच्छेन्द्रनाथ ने अगुआई की कौलज्ञाननिर्णय में उनके सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। जिसके वे ही लेखक हैं।

योगिनी कौल सम्प्रदाय के अनुवाइयों ने भारत के सभी प्रांतों में उनकी शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करने का प्रयास किया हालाँकि उनकी गतिविधियों के प्रमुख केन्द्र आधुनिक भारत के राज्य उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, उड़ीसा तथा कोयम्बटूर रहे हैं। योगिनी मंदिरों के अवशेष उड़ीसा के हीरापुर एवं रानीपुर झरियाल, मध्यप्रदेश में खजुराहों, मितौली तथा भेड़ाघाट, उत्तर प्रदेश के रिखियान तथा दुधई में विद्यमान हैं। हालाँकि सभी मंदिरों को चौंसठ योगिनी कहा गया है परन्तु उनके कक्षों की संख्या में भिन्नता है। हीरापुर तथा रानीपुर झरियाल के प्रकरण में वह 64, मितौली में 65, दुबई और बडोह में 42 तथा भेड़ाघाट में 81 हैं। यह भेड़ाघाट मन्दिर को अनोखा बना देता है।

स्थापत्य के दृष्टिकोण से चौंसठ योगिनी के मन्दिर या तो वृत्ताकार हैं अथवा आयताकार, घिरे हुए वृत्ताकार मठ के केन्द्र में मन्दिर निर्मित है अथवा रिक्त है, वृत्ताकार दीवार के भीतरी सतह के अनुरूप, आधारों पर योगिनी प्रतिमाएँ स्थापित हैं। खजुराहों एवं बडोह के

*सहायक प्राध्यापक, हिन्दी-विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003